भूमण्डलीकरण के दौर में टेलीविजन संस्कृति एवं शिक्षा

शिव बचन सिंह यादव

भूमण्डलीकरण के इस दौर में टी0 वी0 ने जिस तरह से जनमानस में अपनी पैठ बनाई है, संभवतः किसी दूसरे जन माध्यम की स्वीकार्यता इस स्तर की नहीं है। आज टी.वी. लोगों की जरूरत बन गई है। शहरों से लेकर गाँवों तक इसकी प्रभावी भूमिका देखी जा सकती है। समाज का कोई भी तबका इससे पूर्णतया अछूता नहीं रह गया है। इसका जादू हर आयु वर्ग के लोगों को बांधे हुए है। बच्चे, वृद्ध एवं जवान सभी इसके फैन हैं। सभी इससे आनन्द ले रहे हैं। 1959 में जब टी.वी. दूरदर्शन के रूप में हिन्दुस्तान में आया था, तो लोगों में यह आशा बंधी थी कि इससे ज्ञानोपयोगी चीजों के साथ–साथ स्वस्थ मनोरंजन भी दर्शकों को उपलब्ध होगा। यह सांस्कृतिक उन्नयन में सहायक बनकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देगा। साहित्यिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों को बढ़ावा देकर युवा पीढ़ी को एक मजबूत मंच प्रदान करेगा। लेकिन मौजूदा हालात को देखने से केवल और केवल निराशा ही हाथ लगती है। आज बुद्धिजीवियों की सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया है। दरअसल दृश्य एवं श्रव्य माध्यम होने के कारण टी0वी0 का प्रभाव अन्य माध्यमों की तुलना में ज्यादा होता है। इसके कारण बच्चों का सामाजीकरण गलत तरीके से हो रहा है, जिससे उनके व्यवहार में आक्रामकता एवं हिंसा परिलक्षित होने लगी है।